

राग पूर्वकल्याण यह एक अप्रचलित राग है। क्रमिक पुस्तक मालिकाके छठे भागमें इस रागका संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। कर्नाटक संगीतके पूर्वकल्याणी इस रागका रूपांतर हिन्दुस्तानी संगीतमें, रागांगकी संकल्पनाको ध्यानमें रखते हुए, आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजीने किया है। यह राग मारवा और कल्याणके संयोगसे बना है। यह राग सम्पूर्ण है, उसका वादी रिषभ और संवादी धैवत है। आरोहमें निषाद वक्र और अवरोहमें पंचमको दुर्बल रखनेसे राग स्वरूप अधिक स्पष्ट होता है। रागका गानसमय संध्या-काल है। पूर्वी और मारवा थाटके रागोंके पश्चात और कल्याण थाटके रागोंके पहले गाये जानेवाला राग, इस अर्थसे उसे परमेलप्रवेशक राग माना जाता है। संक्षेपमें ऐसा कह सकते हैं की इस रागका विस्तार इसे कोमल रिषभका कल्याण ऐसा मानकर करना होगा। पूर्व कल्याण रागका साधारण स्वरूप और विशेष स्वर संगतियाँ इस प्रकार है।

आरोह- सा रे, ग मं प, ध, नि ध सां । अवरोह - सां नि ध प, मं ग, रे सा।

सा, रे नि रे सा, रे नि रे नि ध, ध नि रे ग मं प, रे, मं प ध मं, ग, रे सा ; नि रे नि ध , रे नि रे ग मं प, मं ध ग प, ध मं ग, नि नि ध मं ग रे सा; ध नि रे ग, रे, ग मं प, मं ध, मं ध नि प, ध, मं ग, प, रे ग, नि ध मं ग, रे सा

पूर्व कल्याण इसी रागके नामसे समानता रखनेवाले कुछ राग मिलते हैं; जैसे पूरियाकल्याण और पूरबी कल्याण। नाममें समानता होनेके कारण कभी कभी गलतीसे रागका स्वरूप समझनेमें विद्यार्थियोंकी गलतफ़हमी हो सकती है। पूरियाकल्याण रागमें पूरिया और कल्याण रागोंका मिश्रण है। राग पूरबी कल्याणमें पूर्वी और कल्याण रागोंका मिश्रण है। पूरियाकल्याण राग किराना घरानेके गायक ज्यादातर गाते हैं; तो पूरबीकल्याण राग विष्णुपूर घरानेके वादकोंने प्रस्तुत किया है।

आजके ऑडियोमें हम आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजी रचित विलम्बित और द्रुत रचना सुनेंगे, जो उनके शिष्य पंडित के जी गिंडेजीने गायी हुई है।

**संदर्भ** : "क्रमिक पुस्तक मालिका" भाग ६; "अभिनव गीत मंजरी" भाग १,

**आभार** : पंडित यशवंतबुवा महाले, श्री अजय गिंडे.

१-१-२०२३

Link to the list of 140+ Raga of the month articles -

@ Archive of ROTM Articles - [http://oceanofragas.com/Raga\\_Of\\_Month\\_Alphabetically.aspx](http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx)